ज्ञान व कर्म की गुणवत्ता

रोहित धनकर

अनुवाद : ब्रज श्रीवास्तव

किसी निष्कर्ष तक पहुंचने की प्रक्रिया में ज्ञान एक मुख्य घटक होता है। वैसे नैतिक मूल्यों का भी आधारभूत महत्व होता है, लेकिन इनसे संबंधी बोध के लिए, समझ और अनुभव के लिए भी ज्ञान की ही आवश्यकता होती है, क्योंकि कोई बात समझे बिना और बौद्धिक आधार पर प्रमाणित किए बिना कोरी भावुकता के साथ उसे संचारित करना अपना मत औरों पर थोपने से ज्यादा कुछ नहीं हो सकता। कोई मूल्य स्थिरता लिए है कि नहीं, इस बात के प्रति सजग होने के लिए भी स्थिति के सापेक्ष उचित ज्ञान की आवश्यकता होती है, हालांकि किसी भी निर्णयात्मक प्रक्रिया को, इसके भावनात्मक पक्ष के बिना पूर्ण नहीं माना जा सकता। वास्तव में तो स्थिति से उपजे असंतोष के कारण ही एक निष्कर्ष की आवश्यकता का सवाल खड़ा होता है। प्रकारांतर से यह भावनात्मकता की स्वीकृति ही है। परन्तु बमुश्किल प्राप्त नई स्थिति के लिए पर्याप्त समझ बनाए बिना किसी ठोस निर्णय तक पहुंचना संभव नहीं होता। इसीलिए मैं कहता हूं कि निर्णय निर्धारण का प्रतिफल पाने के लिए ज्ञान का निवेश करना एक मुख्य काम होता है।

ज्ञान और कल्पना दोनों के दायरे में विचार करते हुए मैं प्रमाणित सत्य विश्वास (justified true belief) को ज्ञान का केन्द्र मानता हूं, यद्यपि सत्य और प्रमाणीकरण की प्रचलित धारणाएं ज्ञान के जन मापदंड तय करने में काफी हद तक भ्रम पैदा करती हैं तथापि हम जीवन में कई मौकों पर प्रमाणित सत्य विश्वासों (justified true belief) की जरूरत होने पर भी ध्यान नहीं देते और निर्णय पर यह मानकर अमल कर लेते हैं कि ये उचित ही होंगे। जबकि अमल के दौरान हम उनकी सच्चाई के बारे में सुनिश्चित नहीं होते हैं।

उपर्युक्त दोनों बातें यदि मायने रखती हैं तो ज्ञान की गुणवत्ता जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होती है, और निर्णय भी महत्वपूर्ण असर डालते हैं। यहां ज्ञान की गुणवत्ता के पद का उपयोग हम समूची कार्य योजना के स्थान पर करते हैं। किसी को ज्ञान की गुणवत्ता की धारणा अनुचित सी लग सकती है, क्योंकि प्रमाणित सत्य विश्वास अंततः सत्यता को ही सुनिश्चित करने वाला पद है, इसके अलावा ज्ञान का निहितार्थ होगा भी क्या। प्रथम दृष्ट्या मुझे लगता है कि यह धारणा निर्णय निर्धारण के लिए उपयोगी ही है जिसका सामान्यतः भी महत्व है। इसीलिए पूरे विश्लेषण के लिए थोड़ी गुंजाइश रखते हुए, निर्णय निर्धारण की स्थिति में ज्ञान की गुणवत्ता के पहले अंश पर जोर देने के दौरान मैं ज्ञान पर ही फोकस करूंगा।

किसी भी निर्णय के निर्धारण के समय उस स्थिति में तीन बातें विचारणीय होती हैं, मुद्दों की यथा स्थिति, चाही गई स्थिति और वे तरीके जिनको अपना कर कोई स्थिति, वांछित अवस्था में तब्दील होती है। और सबसे खास तो होते हैं दुविधा रूपी मेजबान, जो महत्वपूर्ण निर्णय के समय और ज्यादा परेशान करते हैं। अगर इस सतही विश्लेषण के महत्व को हम ज्यादा तवज्जो ना देते हुए मान लें कि ये मूल्य ही निर्णय के निर्धारण को राह दिखाते हैं तो ये दुविधा काफी हद तक खत्म हो जाती है।

तात्कालिक रूप से कहा जा सकता है कि ज्ञान के संदर्भ में जरूरी बात होती है- पर्याप्तता। किसी स्थिति और असंतोषजनक स्थिति के बारे में पर्याप्त समझ का मतलब है उन संबंधित कारणों की समझ होना, जिनकी वजह से असंतोष उपज आया है, पर्याप्तता से आशय यहां मात्रात्मकता से नहीं, बल्कि थोडा ज्यादा है, यहां पर्याप्तता से आशय है कि संबंधित सब कुछ जान लिया गया है।

यही बात वांछित परिस्थिति हासिल करने के लिए और वांछित परिणाम प्राप्त करने के संबंध में भी है। ज्ञान की गुणवत्ता की दूसरी लड़ी है, उपयोग में लाई जा रही सूचनाओं या विश्वासों की स्पष्टता। कोई दावा करते हुए यह कह भी सकता है कि पर्याप्तता में ही स्पष्टता शामिल है, क्योंकि कोई अस्पष्ट चीज कैसे अर्जित ज्ञान का हिस्सा हो सकती है। मैं स्पष्टता का जिक्र इसलिए कर रहा हूं क्योंकि किसी लक्षित चीज के होने का हमें आभास तो होता है मगर हमारा नजरिया उसके प्रति अपेक्षाकृत बताने में कतराने वाला होता है, उदाहरण के लिए अंधेरे में जब कोई चीज हमारी ओर आ रही होती है तो हम यह तय नहीं कर पाते - कि वो चीज अमुक चीज है अलबत्ता उसकी आकृति और लम्बाई, चौड़ाई और गति से हम कुछ-कुछ अंदाजा लगाते ही हैं, मगर उस आकृति के ठीक-ठीक लक्षण ओझल बने रहते हैं। इसी तरह की अस्पष्टता मौजूदा या वांछित परिस्थिति को समझने में और वांछित परिस्थिति को समझने के तौर-तरीकों में भी हो सकती है। ज्ञान के संदर्भ में स्पष्टता का अभाव दरअसल हमारी निर्णय क्षमता को पंगु बना देता है, खास तौर से तब जब मसला दूसरों के प्रति न्याय करने का हो और परिस्थिति भावनात्मक रूप से ओतप्रोत हो।

ज्ञान की गहनता मुझे ज्ञान का एक और आयाम मालूम होता है, जोकि अंततः उसी तरह महत्वपूर्ण है जैसे कि पर्याप्तता। गहनता से अभिप्राय अवधारणात्मक संपर्कों के ऐसे समृद्ध वेब/संजाल से है जो ना केवल मौजूद स्थिति में उसे विश्लेषित कर सके बल्कि उन कारणों पर भी प्रकाश डाल सके जिन्होंने इन्हें जन्मा है। वे कारण प्राकृतिक, ऐतिहासिक या सामाजिक हो सकते हैं। और यह भी कि यह वेब/संजाल, इच्छित परिणाम लाने के लिए अमल में लाई जा रही योजना में और बदलावों के भरोसेमंद पायदानों में भी मददगार होना चाहिए।

अगर हम विश्वस्त ज्ञान की बात करते हैं तो उसे तर्कसंगत व्यवहार से स्थापित करना एक जरूरी शर्त है, यह कहना यहां लाजमी है कि प्रमाणीकरण की दृढ़ता को ही किसी विशेष निर्णय निर्धारण संदर्भ में ज्ञान की गुणवत्ता के आयाम के रूप में बेहतर समझा जा सकता है, उसकी वजह यह है कि व्यावहारिक दुनिया में ज्यादातर उपयोग किया जाने वाला ज्ञान दोषयुक्त होता है, अधिकांशतः सही प्रमाणीकरण तो मिलता ही नहीं। इसलिए विशेष निर्णय निर्धारण की स्थिति में विश्वासों के प्रमाणीकरण की विश्वसनीयता, गुणवत्ता का खास आकलन होती है।

इसलिए पहले स्तर पर किए जाने वाले मौटा-मोटी विश्लेषण में हम कह सकते हैं कि निर्णय निर्धारण में ज्ञान की गुणवत्ता को पर्याप्तता, स्पष्टता, गहनता और प्रामाणिकता की विश्सनीयता के रूप में समझा जा सकता है. इन चारों में सबसे महत्वपूर्ण है ज्ञान की गुणवत्ता, दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं, अपर्याप्त, अस्पष्ट, धुंधला और अप्रमाणित ज्ञान किसी काम का नहीं होता यह किसी की मदद नही करता।

अगर हम कक्षा में एक शिक्षक की स्थिति को ध्यान में रखकर सोचें तो वह प्रतिदिन नहीं तो सप्ताह में सैकड़ों निर्णयों का निर्धारण करता है, यद्यपि ऐसे निर्णय मामूली से लगते हैं जैसे कि दो बच्चे जब झगडा कर रहे हैं तो किसकी गलती मानी जाए यह भी एक फैसला तो होता ही है, जो बच्चे की जिंदगी पर असर डाल सकता है, तो शिक्षक आम तौर पर ऊपर वर्णित ज्ञान के संदर्भों से इतर, अपने कमजोर ज्ञान के बल पर फैसले लिया करते हैं। यह भी एक बड़ी वजह है कि प्रारंभिक स्कूलों में अध्यापन इतना उबाऊ और थका हुआ-सा है। इस तरह से शिक्षक को जबरन ही निर्णय निर्धारण में फंसा दिया जाता है जबकि वह अपने ज्ञान की सीमा को खुद ही जानता है। यह सब कुछ तनाव पैदा करने वाला हो सकता है।

जीवन में खुश रहने के लिए, प्रेरणा का आधार देने वाले सामाजिक और वैयक्तिक रिश्तों में हम पुनः अपने इसी अधूरे और कमजोर ज्ञान के साथ ही धकेल दिए जाते हैं। जहां अपनी ही सोच मुख्य मार्गदर्शक की भूमिका में होती है और भावनाएं हावी हो जाया करती हैं। एसी स्थिति में अगर कोई ज्ञान की जरूरतभर की गुणवत्ता पर अमल करने की नाकाम कोशिश करता है तो वह भ्रमित और बेवकूफ कहा जा सकता है, खास तौर से तब जब परिणाम आने के दौरान थोड़ा अधिक समय लग रहा होता है। हालांकि बेहतर रूप में समझने के लिए किया गया अथक परिश्रम और बरता गया धीरज बेहतर परिणाम दे सकते हैं। साथ में यह भी कि अगर दोषपूर्ण या आधा अधूरा ज्ञान हो और व्यक्तिगत या व्यावसायिक मामले में किसी खास स्थिति में निर्णय निर्धारण करना हो तो हमेशा अपनी बात को जोरदार तरीके से रखना मानीखेज होता है। चूंकि यह व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन दोनों के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, अतः शिक्षा का एक उद्देश्य यह हो सकता है कि बच्चों को निर्णय लेने की स्थिति में ज्ञान की गुणवत्ता को बेहतर करना सिखाया जाए, अनिश्चित परिस्थितियों में जहां कार्रवाई अपरिहार्य है जोखिम लेने की कला सिखाई जाए और परिस्थिति बिगड़ जाने पर उसका सामना करने को तैयार रहना भी सिखाया जाए। ◆

लेखक परिचय : अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं अकादमिक विकास के निदेशक हैं और दिगन्तर, जयपुर के संस्थापक सदस्य व सचिव हैं।

संपर्क : rohit.dhankar@apu.edu.in

मुख्य आवरण के चित्रकार

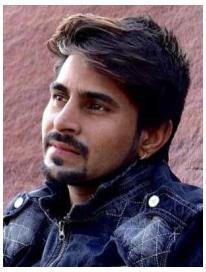

16 फरवरी 1992 को जन्मे कृष्ण कुमार प्रजापत राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट से दृश्यकला स्नातक हैं। चित्रकला एवं मूर्तिकला में समान रूप से सृजनरत कृष्ण बुहत संभावनाशील कलाकार हैं। कई प्रदर्शनियों एवं कार्यशालाओं में इनकी भागीदारी रही है। मानवीय चिंताएं व द्वंद्व इनके शिल्पों में रूपायित होता रहा है। ◆